**"मोरे हृदय परम संदेहा, सुनि कपि प्रगट किन्हीं निज देहा।**
**कनक भूधराकार सरीरा, समर भयंकर अतिबल बीरा।।"**

अर्थ----

मेरे हृदय में बडा भारी संदेह है कि (तुम जैसे बंदर राक्षसों को कैसे जीतेगे) यह सुनकर हनुमान जी ने अपना पर्वत के समान विशाल शरीर प्रकट किया। जो शत्रुओ के हृदय में भय प्रकट करने वाला बलवान और वीर था।

इस सुन्दर काण्ड की चौपाई में जब सीता जी को संदेह हुआ कि बंदर, भालू और रीछ जैसी सेना के साथ रावण पर कैसे विजयी होगे।

तब हनुमान जी ने अपना विशालकाय शरीर प्रकट किया और अपनी शक्ति को दिखलाया।

यदि हमें भी हमारे गुणों के कारण कोई पद मिलता है तो हमें उसका सदुपयोग अच्छे कार्यों के लिए करना चाहिए जिससे समाज का उत्थान हो, न कि अपनी शक्तियों का नाजायज लाभ उठाने का प्रयास करना चाहिए।

ऊंचे पदाधिकारियों को अपने से नीचे पद पर आसीन लोगों को डराने या नीचा दिखाने के लिए अपने पद का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए

CS Praveen Soni
Central Council Member &
Chairman, ICSI-CCGRT